सतत विकास लक्ष्यः अभिवृत्तियों एवं धारणाओं का अध्ययन

Manish Kumar[1], Mukesh Kumar[2]
[1]Assistant professor Teachers' Training College, Bhagalpur
[2]Mahatma Gandhi Central University, Motihari (M.A. Economics Gold Medalist)

सारांश

सतत विकास आज के वैश्विक परिदृश्य में अत्यंत महत्वपूर्ण अवधारणा बन चुका है। पर्यावरणीय असंतुलन, संसाधनों का अंधाधुंध उपयोग, जलवायु परिवर्तन तथा सामाजिक-आर्थिक असमानताओं ने मानव समाज के सामने अनेक चुनौतियाँ उत्पन्न की हैं। इन समस्याओं के समाधान हेतु संयुक्त राष्ट्र द्वारा वर्ष 2015 में सतत विकास लक्ष्य (Sustainable Development Goals - SDGs) को अपनाया गया, जिनका उद्देश्य वर्ष 2030 तक वैश्विक स्तर पर गरीबी उन्मूलन, पर्यावरण संरक्षण तथा समावेशी विकास को सुनिश्चित करना है। प्रस्तुत शोध आलेख का उद्देश्य सतत विकास लक्ष्यों के प्रति महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा (महाराष्ट्र) में अध्ययनरत विद्यार्थियों की अभिवृत्तियों (Attitudes) एवं धारणाओं (Perceptions) का अध्ययन करना है। अध्ययन में यह समझने का प्रयास किया गया है कि समाज के विभिन्न वर्गों, विशेषकर विद्यार्थियों और शिक्षकों के बीच सतत विकास लक्ष्यों के प्रति जागरूकता, दृष्टिकोण तथा व्यवहार किस प्रकार विकसित हो रहे हैं। यह शोध मुख्यतः वर्णनात्मक (Descriptive) पद्धति पर आधारित है, जिसमें प्रश्नावली तथा साक्षात्कार के माध्यम से डेटा संग्रह किया गया है। अध्ययन के परिणामों से यह स्पष्ट होता है कि अधिकांश प्रतिभागियों में सतत विकास लक्ष्यों के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति पाई जाती है, किन्तु इसके संबंध में समुचित ज्ञान और व्यवहारिक क्रियान्वयन अभी भी सीमित है। विशेष रूप से शिक्षा के माध्यम से सतत विकास के सिद्धांतों को बढ़ावा देने की आवश्यकता महसूस की गई है। अतः अध्ययन यह सुझाव देता है कि शिक्षा प्रणाली में सतत विकास के सिद्धांतों को पाठ्यक्रम, सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों तथा सामुदायिक कार्यक्रमों के माध्यम से प्रभावी रूप से शामिल किया जाना चाहिए। इससे विद्यार्थियों में पर्यावरणीय चेतना, सामाजिक जिम्मेदारी तथा सतत जीवन शैली को अपनाने की प्रवृत्ति विकसित होगी।

मुख्य शब्दः सतत विकास, सतत विकास लक्ष्य (SDGs), अभिवृत्ति, धारणाएँ, पर्यावरणीय शिक्षा

प्रस्तावना

सतत विकास (Sustainable Development) 21वीं सदी का एक महत्वपूर्ण विषय है, जो वर्तमान और भविष्य की पीढ़ियों के लिए संसाधनों के संरक्षण और संतुलित विकास को प्राथमिकता देता है। यह एक अत्यंत आवश्यक और केंद्रीय विचार बन चुका है। यह केवल पर्यावरणीय संरक्षण तक सीमित नहीं है, बल्कि सामाजिक न्याय, आर्थिक समानता और भावी पीढ़ियों के अधिकारों की रक्षा करने वाला एक समग्र दृष्टिकोण है। वर्तमान युग में जब प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन, जलवायु परिवर्तन, जैव विविधता की हानि और सामाजिक विषमता जैसी समस्याएँ गहराती जा रही हैं, तब सतत विकास एकमात्र ऐसा रास्ता प्रतीत होता है जो इस संकट से उबरने में सहायक हो सकता है। यह अवधारणा 1987 में ब्रुंटलैंड कमीशन की रिपोर्ट "हमारा साझा भविष्य"("Our Common Future")के माध्यम से अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सामने आई। सतत विकास तीन प्रमुख पहलुओं– आर्थिक विकास,

Published: 31 March 2026
DOI: https://doi.org/10.70558/SPIJSH.2026.v3.i3.45636
Copyright © 2026 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0).

सामाजिक समावेशन, और पर्यावरणीय संरक्षण– के बीच संतुलन स्थापित करने का प्रयास करता है। यह अवधारणा संयुक्त राष्ट्र द्वारा 2015 में अपनाए गए सतत विकास लक्ष्यों (Sustainable Development Goals -SDGs) के माध्यम से और अधिक प्रासंगिक हो गई है। जलवायु परिवर्तन, प्राकृतिक संसाधनों की घटती उपलब्धता, और सामाजिक असमानता जैसे मुद्दे इस बात की आवश्यकता को रेखांकित करते हैं कि युवा पीढ़ी को सतत विकास के महत्व को समझना चाहिए। विश्वविद्यालय के छात्र देश का भविष्य हैं, और उनकी सोच, व्यवहार और दृष्टिकोण सतत विकास की दिशा में एक निर्णायक भूमिका निभा सकते हैं। इस शोध का उद्देश्य यह समझना है कि विश्वविद्यालय के विद्यार्थीगण सतत विकास को कैसे देखते हैं और वे इसे अपने दैनिक जीवन में किस हद तक लागू करने को तैयार हैं।

भारत और सतत विकास

भारत में सतत विकास की अवधारणा को संविधान के अनुच्छेद 48ए और 51A(g) के माध्यम से समर्थन प्राप्त है, जहाँ पर्यावरण की रक्षा को नागरिकों और राज्य की जिम्मेदारी के रूप में मान्यता दी गई है। इसके साथ ही, भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय कार्ययोजनाएँ, जैसे राष्ट्रीय हरित अभियान, जल जीवन मिशन, स्वच्छ भारत अभियान और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में सतत विकास को एकीकृत करने के प्रयास किए गए हैं। इन प्रयासों की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि आने वाली पीढ़ियाँ-विशेषकर विश्वविद्यालयी छात्र-इसे किस दृष्टिकोण से देखते हैं।

विश्वविद्यालय छात्रों की भूमिका

विश्वविद्यालय केवल उच्च शिक्षा प्राप्त करने का केंद्र नहीं हैं, बल्कि यह सामाजिक परिवर्तन के केंद्र भी हैं। यहाँ अध्ययनरत छात्र भावी शिक्षक, नेता, प्रशासक, नीति निर्माता और शोधकर्ता बनते हैं। यदि उन्हें सतत विकास की अवधारणा की गहरी समझ और व्यावहारिक दृष्टिकोण प्राप्त हो, तो वे अपने-अपने क्षेत्रों में परिवर्तन के वाहक बन सकते हैं। उनकी अभिवृत्ति और धारणाएँ यह निर्धारित करती हैं कि वे किस हद तक सतत व्यवहार को अपनाएँगे और समाज को किस दिशा में प्रेरित करेंगे।

सतत विकास की परिभाषा

ब्रुन्डलैंड आयोग(1887) के अनुसार- "सतत विकास वह विकास है, जो भविष्य की पीढ़ियों की अपनी जरूरतों को पूरा करने की क्षमता से समझौता किए बिना वर्तमान की जरूरतों को पूरा करता है।(Sustainable development is development that meets the needs of the present without compromising the ability of future generations to meet their own needs.)".

सतत विकास का इतिहास

1950 के दशक के उत्तरार्ध में, कार्सन ने पर्यावरण संरक्षण पर काम करना शुरू किया। साइलेंट स्प्रिंग(Silent Spring) राचेल कार्सन(Rachel Carson) की एक पर्यावरण विज्ञान पुस्तक है,जो 27 सितंबर,1962 को प्रकाशित हुई। इस पुस्तक में द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान सैनिकों द्वारा इस्तेमाल किए गए एक प्रकार के कीटनाशक के अंधाधुंध उपयोग से होने वाले पर्यावरणीय नुकसान का दस्तावेजीकरण किया गया है। कार्सन ने रासायनिक उद्योग पर दुष्प्रचार फैलाने का, और सार्वजनिक अधिकारियों पर उद्योग के विपणन दावों को निर्विवाद रूप से स्वीकार करने का आरोप लगाया।जिससे लोगों का ध्यान पर्यावरण संरक्षण की ओर गया।

गैरेट जेम्स हार्डिन एक अमेरिकी पारिस्थितिकीविज्ञानी और सूक्ष्म जीवविज्ञानी थे। उन्होंने अपने करियर को मानव अतिजनसंख्या के मुद्दे पर केंद्रित किया और उन्हें 1968 में विज्ञान में इसी शीर्षक के पेपर में कॉमन्स की

त्रासदी(tragedy of the commons) के प्रदर्शन के लिए जाना जाता है। जिसने इसकी ओर ध्यान आकर्षित किया कि व्यक्तियों के निर्दोष कार्यों से पर्यावरण को नुकसान हो सकता है। पहली बार 1968 में अमेरिकी पारिस्थितिकीविज्ञानी गैरेट हार्डिन द्वारा प्रस्तुत, द ट्रेजेडी ऑफ कॉमन्स एक ऐसी स्थिति का वर्णन करती है जहां साझा पर्यावरणीय संसाधनों का अत्यधिक उपयोग और दोहन किया जाता है, और अंततः समाप्त हो जाते हैं, जिससे इसमें शामिल सभी लोगों के लिए जोखिम पैदा होता है। हार्डिन पेपर के सारांश में, ट्रेजेडी ऑफ द कॉमन्स ने अधिक जनसंख्या की बढ़ती चिंता को संबोधित किया था।

जीवन रक्षा का एक खाका (A Blueprint for Survival) एक प्रभावशाली पर्यावरणवादी पाठ था जिसने पर्यावरणीय समस्याओं की तात्कालिकता और भयावहता की ओर ध्यान आकर्षित किया। पहली बार जनवरी 1972 में द इकोलॉजिस्ट के एक विशेष संस्करण के रूप में प्रकाशित हुआ, बाद में इसे पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया गया और इसकी 750,000 से अधिक प्रतियां बिकीं।

Club of Rome's Limits to Growth report (1972) यह विकास की सीमाएं Limits to Growth (LTD) 1972 की एक रिपोर्ट है। जिसमें कंप्यूटर सिमुलेशन द्वारा अध्ययन किए गए संसाधनों की सीमित आपूर्ति के साथ तेजी से आर्थिक और जनसंख्या वृद्धि की संभावना पर चर्चा की गई है। अध्ययन में पृथ्वी और मानव प्रणालियों के बीच बातचीत के परिणाम का अनुकरण करने के लिए वर्ल्ड 3 कंप्यूटर मॉडल का उपयोग किया गया। क्लब ऑफ रोम द्वारा शुरू किए गए इस अध्ययन के निष्कर्षों को पहली बार 1971 की गर्मियों में मॉस्को और रियो डी जनेरियो में अंतरराष्ट्रीय समारोहों में प्रस्तुत किया गया था। 186 रिपोर्ट के लेखक डोनेला एच. मीडोज , डेनिस एल. मीडोज , जोर्जेन रैंडर्स हैं और विलियम डब्ल्यू. बेहरेंस III, 17 शोधकर्ताओं की एक टीम का प्रतिनिधित्व करते हैं। इसके प्रकाशन के बाद से, 30 भाषाओं में पुस्तक की लगभग 30 मिलियन प्रतियां खरीदी जा चुकी हैं।

मानव पर्यावरण पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन, 5-16 जून 1972 में स्टॉकहोम में मानव पर्यावरण पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन पर्यावरण को एक प्रमुख मुद्दा बनाने वाला पहला विश्व सम्मेलन था। प्रतिभागियों ने पर्यावरण के सुदृढ़ प्रबंधन के लिए स्टॉकहोम घोषणा और मानव पर्यावरण के लिए कार्य योजना और कई प्रस्तावों सहित सिद्धांतों की एक श्रृंखला को अपनाया। स्टॉकहोम घोषणा, जिसमें 26 सिद्धांत शामिल थे, जिसमें पर्यावरणीय मुद्दों को अंतरराष्ट्रीय चिंताओं में सबसे आगे रखा और आर्थिक विकास, वायु, जल और महासागरों के प्रदूषण और कुएं के बीच संबंध पर औद्योगिक और विकासशील देशों के बीच बातचीत की शुरुआत की। स्टॉकहोम सम्मेलन का एक प्रमुख परिणाम संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (यूएनईपी) का निर्माण था। इसकी स्थापना जून 1972 में स्टॉकहोम में मानव पर्यावरण पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन के बाद इसके पहले निदेशक मौरिस स्ट्रॉन्ग द्वारा की गई थी। इसका मुख्यालय नैरोबी, केन्या में है।

मानव पर्यावरण पर 1972 के संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन के दस वर्ष बाद भी अनेक वैश्विक पर्यावरणीय चुनौतियों का समुचित समाधान नहीं किया जा सका था। तब 1980 के दशक के दौरान, विश्व बैंक ने तीसरी दुनिया की आर्थिक और सामाजिक नीतियों में तेजी से हस्तक्षेप किया और 1983 में ब्रुन्डलैंड आयोग का गठन हुआ। हमारा साझा भविष्य(Our Common Future),जिसे ब्रुन्डलैंड रिपोर्ट के नाम से भी जाना जाता है, अक्टूबर 1987 में ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस के माध्यम से संयुक्त राष्ट्र द्वारा प्रकाशित किया गया । यह प्रकाशन नॉर्वे के पूर्व प्रधानमंत्री और पर्यावरण और विकास पर विश्व आयोग (WCED) के अध्यक्ष ग्रो हार्लेम ब्रुन्डलैंड की मान्यता में था। इसका लक्ष्य बहुपक्षवाद और सतत विकास पथ की खोज में राष्ट्रों की परस्पर निर्भरता थी। रिपोर्ट ने स्टॉकहोम सम्मेलन की भावना को पुनः प्राप्त करने का प्रयास किया जिसने पर्यावरण संबंधी चिंताओं को औपचारिक राजनीतिक विकास क्षेत्र में पेश किया था। हमारा साझा भविष्य(Our Common Future) ने पर्यावरण संबंधी मुद्दों को राजनीतिक एजेंडे में मजबूती से रखा; इसका उद्देश्य पर्यावरण और विकास पर एक ही मुद्दे के रूप में चर्चा करना था।

पर्यावरण और विकास पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन (UNCED), जिसे रियो डी जेनेरो पृथ्वी शिखर सम्मेलन, रियो शिखर सम्मेलन, रियो सम्मेलन और पृथ्वी शिखर सम्मेलन के रूप में भी जाना जाता है। यह रियो डी जेनेरियो ब्राजील में आयोजित एक प्रमुख संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन था। रियो डी जेनेरो सम्मेलन 3 जून से 14 जून 1992 तक शीत युद्ध के बाद विकास के मुद्दों पर अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर एक साथ सहयोग करने के लिए सदस्य राज्यों की प्रतिक्रिया के रूप में पृथ्वी शिखर सम्मेलन बनाया गया था। 1992 के सम्मेलन की एक प्रमुख उपलब्धि जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र रूपरेखा सम्मेलन (United Nations Framework Convention on Climate Change (UNFCCC)की स्थापना थी। जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र फ्रेमवर्क कन्वेंशन (UNFCCC) खतरनाक जलवायु परिवर्तन को सीमित करने के लिए एक समझौते पर बातचीत करने के लिए संयुक्त राष्ट्र की प्रक्रिया है। यह सम्मेलन जलवायु परिवर्तन सम्मेलन पर एक समझौता था जिसके परिणामस्वरूप क्योटो प्रोटोकॉल(Kyoto Protocol) और पेरिस समझौता(Paris Agreement) हुआ। एक अन्य समझौता " स्वदेशी लोगों की भूमि पर ऐसी कोई भी गतिविधि नहीं करने का था जिससे पर्यावरण को नुकसान पहुंचे या जो सांस्कृतिक रूप से अनुचित हो"। इसमें सतत विकास के सिध्दांतों को स्थापित किया गया।

क्योटो प्रोटोकॉल को 11 दिसंबर 1997 को क्योटो , जापान में अपनाया गया था और 16 फरवरी 2005 को लागू हुआ था। क्योटो प्रोटोकॉल एक अंतरराष्ट्रीय संधि थी, जिसने 1992 के जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र फ्रेमवर्क कन्वेंशन (यूएनएफसीसीसी) को आगे बढ़ाया जो राज्य दलों को ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करने के लिए प्रतिबद्ध करता है। क्योटो प्रोटोकॉल ने वायुमंडल में ग्रीनहाउस गैस सांद्रता को "एक स्तर तक कम करके ग्लोबल वार्मिंग की शुरुआत को कम करने के लिए UNFCCC के उद्देश्य को लागू किया जो जलवायु प्रणाली के साथ खतरनाक मानवजनित हस्तक्षेप को रोक देगा।

पेरिस समझौता (या पेरिस समझौते , पेरिस जलवायु समझौते) जलवायु परिवर्तन पर एक अंतरराष्ट्रीय संधि है जिसे 2015 में अपनाया गया था। पेरिस समझौते का दीर्घकालिक तापमान लक्ष्य है जो वैश्विक सतह के तापमान में वृद्धि को पूर्व-औद्योगिक स्तरों से 2 °C (3.6 °F) से नीचे रखना है। संधि में यह भी कहा गया है कि अधिमानतः वृद्धि की सीमा केवल 1.5 °C (2.7 °F) होनी चाहिए। इसका उद्देश्य देशों को जलवायु परिवर्तन के प्रभावों के अनुकूल ढलने में मदद करना और पर्याप्त वित्त जुटाना है।

मिलेनियम शिखर सम्मेलन कई विश्व नेताओं के बीच एक बैठक थी, जो 6 से 8 सितंबर 2000 तक तीन दिनों तक चली। यह संयुक्त राष्ट्र के मुख्यालय न्यूयॉर्क शहर में आयोजित की गई। इसका उद्देश्य 21वीं सदी के मोड़ पर संयुक्त राष्ट्र की भूमिका पर चर्चा करना था। यह बैठक 2000 के इतिहास में विश्व के नेताओं की सबसे बड़ी सभा थी। इसके पांच साल बाद विश्व शिखर सम्मेलन हुआ, जो 14 से 16 सितंबर 2005 तक हुआ। इस शिखर सम्मेलन में, संयुक्त राष्ट्र के 189 सदस्य देशों ने 2015 तक दुनिया के सबसे गरीब देशों के नागरिकों को बेहतर जीवन प्राप्त करने में मदद करने पर सहमति व्यक्त की।

वर्ष 2000 में न्यूयॉर्क में संयुक्त राष्ट्र मुख्यालय पर हुई सहस्त्राब्दी शिखर बैठक में विकास संबंधी आठ उद्देश्यों को स्वीकार किया गया, जिन्हें सहस्त्राब्दी विकास लक्ष्य (Millennium Development Goals- MDGs) के नाम से जाना जाता है। यहां उदेश्यों ने वर्ष 2000 से 2015 तक देशों के लिये उनकी राष्ट्रीय विकास रणनीतियों का अनुसरण करने का आलेख तैयार किया था। कुल आठ सहस्त्राब्दी विकास लक्ष्य रखे गए थे, सबमें विकास के विभिन्न विषयों को रखा गया था। संयुक्त राष्ट्र के उस समय के 189 सदस्य राष्ट्रों तथा 22 अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं ने 2015 तक 8 लक्ष्यों की प्राप्ति के लिये संकल्प लिया,जो निम्न हैं - 1.अत्यधिक गरीबी और भुखमरी को मिटाना, 2.सार्वभौमिक प्राथमिक शिक्षा प्राप्त करना, 3.लैंगिक समानता को बढ़ावा देना और महिलाओं को सशक्त बनाना,

4.शिशु मृत्यु दर को कम करने के लिए, 5.मातृ स्वास्थ्य में सुधार हेतु 6.एचआईवी/एड्स , मलेरिया और अन्य बीमारियों से निपटने के लिए, 7.पर्यावरणीय स्थिरता सुनिश्चित करना और 8.विकास के लिए वैश्विक साझेदारी विकसित करना

जोहान्सबर्ग में 2002 के सतत विकास पर विश्व शिखर सम्मेलन में एक राजनीतिक घोषणा और कार्यान्वयन योजना को अपनाया गया था। पर्यावरण के सम्मान को ध्यान में रखते हुए विकास को प्राप्त करने के लिए की जाने वाली गतिविधियों और उपायों के एक सेट को शामिल करने वाले प्रावधान शामिल थे। इस शिखर सम्मेलन में, जिसमें सौ से अधिक राष्ट्राध्यक्षों और सरकार के प्रमुखों और हजारों सरकारी प्रतिनिधियों और गैर-सरकारी संगठनों ने भाग लिया, कई दिनों के विचार-विमर्श के बाद, जल, ऊर्जा, स्वास्थ्य, कृषि, जैविक विविधता और चिंता के अन्य क्षेत्रों से संबंधित निर्णय लिए गए।

सतत विकास पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन - या रियो+20 - 20-22 जून 2012 को ब्राजील के रियो डी जेनेरियो में आयोजित हुआ। इसके परिणामस्वरूप एक केंद्रित राजनीतिक परिणाम दस्तावेज तैयार हुआ जिसमें सतत विकास को लागू करने के लिए स्पष्ट और व्यावहारिक उपाय शामिल हैं। सम्मेलन में सदस्य देशों ने सहस्राब्दि विकास लक्ष्यों (एमडीजी) के आधार पर सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) का एक सेट विकसित करने के लिए एक प्रक्रिया शुरू करने का निर्णय लिया, तथा इसे 2015 के बाद के विकास एजेंडे के साथ एकीकृत करने का निर्णय लिया। सम्मेलन में हरित अर्थव्यवस्था नीतियों पर नवीन दिशा-निर्देश भी अपनाए गए तथा सतत विकास के वित्तपोषण के लिए रणनीति तैयार की गई।

सतत विकास का लक्ष्य

1. गरीबी उन्मूलन
2. भुखमरी समाप्त करना
3. स्वास्थ्य और कल्याण
4. गुणवत्तापूर्ण शिक्षा
5. लैंगिक समानता
6. स्वच्छ जल और स्वच्छता
7. सस्ती और स्वच्छ ऊर्जा
8. सार्थक कार्य और आर्थिक विकास
9. उद्योग, नवाचार और आधारभूत संरचना
10. असमानताओं को घटाना
11. सतत शहर और समुदाय
12. जिम्मेदार उपभोग और उत्पादन
13. जलवायु परिवर्तन पर कार्रवाई
14. जल जीवन
15. स्थलीय जीवन
16. शांति, न्याय और सशक्त संस्थान
17. लक्ष्य प्राप्ति के लिए भागीदारी

अध्ययन की आवश्यकता

अधिकांश छात्र सतत विकास के प्रति सामान्य जागरूकता तो रखते हैं, लेकिन इसकी व्यापक समझ और व्यवहारिक पक्षों से अपरिचित हैं। विशेषकर सामाजिक और आर्थिक आयामों के प्रति उनकी जानकारी सीमित पाई गई है। यही कारण है कि यह शोध अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है। इस अध्ययन के माध्यम से हम यह जान सकेंगे कि छात्र सतत विकास को केवल एक विषय के रूप में देख रहे हैं या एक व्यवहारिक दृष्टिकोण के रूप में अपना भी रहे हैं।

अध्ययन का औचित्य

सतत विकास आज के समय की एक अत्यंत महत्वपूर्ण आवश्यकता बन चुका है। बढ़ती जनसंख्या, प्राकृतिक संसाधनों का तीव्र दोहन, जलवायु परिवर्तन, और सामाजिक-आर्थिक असमानता जैसी समस्याएँ वैश्विक स्तर पर गंभीर चुनौतियाँ उत्पन्न कर रही हैं। इन समस्याओं का समाधान केवल नीतिगत हस्तक्षेपों से संभव नहीं है, बल्कि

इसके लिए समाज के विभिन्न वर्गों, विशेष रूप से युवाओं की सक्रिय भागीदारी आवश्यक है। विश्वविद्यालय के विद्यार्थी आने वाले समय में समाज और अर्थव्यवस्था के महत्वपूर्ण घटक बनने वाले हैं, अतः उनका सतत विकास के प्रति दृष्टिकोण समझना और उसे सही दिशा में प्रेरित करना आवश्यक है।

समस्या कथन

"सतत विकास के प्रति विश्वविद्यालयी विद्यार्थियों की अभिवृति एवं धारणाओं का अध्ययन"

संक्रियात्मक परिभाषा

सतत विकासः सतत विकास का अर्थ ऐसा विकास है जो वर्तमान आवश्यकताओं को पूरा करता है, लेकिन भविष्य की पीढ़ियों की जरूरतों को प्रभावित किए बिना। यह तीन स्तंभों – आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरणीय संतुलन पर आधारित होता है।

अभिवृतिः इस शोध में 'अभिवृति' से आशय विद्यार्थियों की सतत विकास के प्रति सोच, विश्वास, दृष्टिकोण, और व्यवहारिक झुकाव से है। यह उनके ज्ञान, अनुभव और मूल्यों के आधार पर निर्धारित किया जाता है।

धारणाः किसी बात को समझना। यह संवेदी जानकारी को पहचानने और समझने की प्रक्रिया भी हैं ।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध का उद्देश्य महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा में अध्ययनरत विद्यार्थियों में सतत विकास के प्रति अभिवृति एवं धारणाओं का अध्ययन करना है। अतः शोध उद्देश्यों एवं प्रश्नों को ध्यान में रखते हुए वर्णात्मक सर्वेक्षण विधि को उपयुक्त शोध प्रविधि के रूप में अपनाया गया है।

शोध प्रश्न

1. विद्यार्थियों में सतत विकास के प्रति अभिवृति क्या हैं?
2. विद्यार्थियों में सतत विकास के प्रति धारणाएँ क्या हैं?
3. विद्यार्थियों में सतत विकास के प्रति अभिवृति एवं धारणाओं का समग्र स्वरूप कैसा है?

शोध उद्देश्य

1. विद्यार्थियों में सतत विकास के प्रति अभिवृति का अध्ययन करना।
2. विद्यार्थियों में सतत विकास के प्रति धारणाओं का अध्ययन करना।
3. विद्यार्थियों में सतत विकास के प्रति अभिवृति एवं धारणाओं का समग्र अध्ययन करना।

प्रतिचयन विधि

न्यादर्श के रूप में महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय वर्धा महाराष्ट्र के विभिन्न विभाग के सूची से 60 विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक रूप से किया गया।

शोध उपकरण

शोध की परिशुद्धता को ध्यान में रखते हुए आँकड़ों का संग्रहण स्वनिर्मित सतत विकास के प्रति अभिवृति मापनी (पांच बिंदु आधारित लिकर्ट मापनी) और साक्षात्कार अनुसूची उपकरण का उपयोग किया गया हैं। जिसका निर्माण शोधकर्ता द्वारा स्वयं अपने शोध पर्यवेक्षक के निर्देशन में किया है।

परिणाम

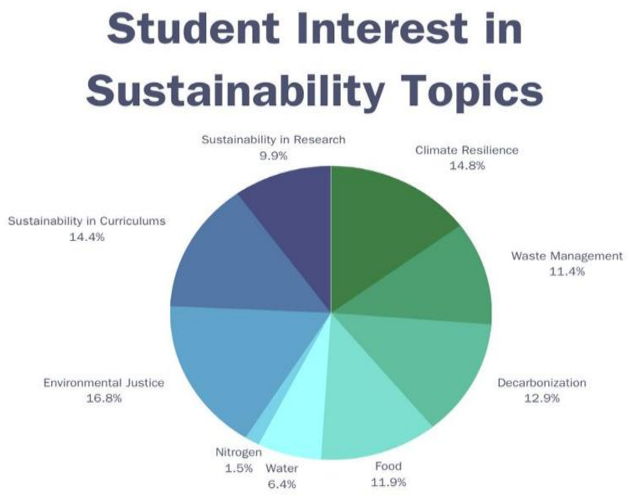

महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के अधिकांश विद्यार्थियों द्वारा सतत विकास के अर्थ से अच्छी तरह परिचित हैं।सतत विकास का सबंध केवल पर्यावरण से ही नहीं बल्कि समाज और अर्थव्यवस्था से भी हैं इसको लेकर विद्यार्थियों में अत्यंत सकारात्मक सोच हैं। विद्यार्थीगण सतत विकास के तीनों प्रमुख स्तंभों आर्थिक, सामाजिक, पर्यावरणीय से परिचित है। कुछ विद्यार्थियों को SDGs की अवधारणाओं से जोड़ने के लिए अतिरिक्त प्रयासों की आवश्यकता है। जलवायु परिवर्तन और सतत विकास के बीच गहरा संबंध है। अधिकांश विद्यार्थियों में पर्यावरणीय संकटों और सतत विकास की पारस्परिकता को लेकर समुचित समझ विकसित हो चुकी है। हालांकि, जो थोड़े से लोग असहमत या अनिश्चित हैं, उनके लिए शिक्षा व संवाद बढ़ाने की आवश्यकता है ताकि जलवायु नीतियों में सामूहिक भागीदारी सुनिश्चित की जा सके।

वैश्विक स्तर पर अपनाई गई पहलें जैसे कि Paris Agreement या SDGs, स्थानीय नीतियों और व्यवहार को निर्देशित करती हैं। इससे विद्यार्थी पूरी तरह से परिचित नहीं हैं। .सामाजिक समानता भी सतत विकास का अभिन्न हिस्सा है, जिसको लेकर अधिकांश विद्यार्थियों में सामाजिक समानता के महत्व को लेकर जबरदस्त समझ विकसित हो चुकी है। सतत विकास अब एक वैकल्पिक विचार नहीं, बल्कि आवश्यक जीवनशैली और नीतिगत सिद्धांत के रूप में स्वीकार किया जा चुका है। यह नीति-निर्माताओं और शैक्षिक संस्थानों के लिए प्रेरणादायक संकेत है। सतत विकास से समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाया जा सकता हैं। विद्यार्थियों कहना हैं कि सतत विकास मानव अस्तित्व के लिए अनिवार्य है। अधिकांश विद्यार्थी सतत विकास को केवल एक आदर्श नहीं, बल्कि एक जीवन-रक्षक आवश्यकता के रूप में स्वीकार करते हैं। विद्यार्थियों ने सहमति जताई हैं कि सतत विकास के लक्ष्य (SDGs) महत्वपूर्ण हैं। सभी ने स्वीकार किया कि शिक्षा सतत विकास को प्रोत्साहन देने का प्रभावी माध्यम है। अगर व्यावहारिक पहलू पर ध्यान दिया जाए तो कि विचार और व्यवहार के बीच एक आंशिक अंतर मौजूद है। यह देखा गया हैं कि प्लास्टिक जैसे वैश्विक संकट के समाधान में व्यक्तिगत भागीदारी अत्यंत महत्त्वपूर्ण है, और यह डेटा इस दिशा में सकारात्मक संकेत प्रदान करता है।

विद्यार्थियों का व्यवहार संसाधन संरक्षण की दिशा में सकारात्मक है। कुछ लोगों को अभी भी व्यवहार में परिवर्तन लाने की आवश्यकता है। स्थानीय निकायों और स्कूलों द्वारा चलाए जाने वाले जागरूकता कार्यक्रम इस खाई को भरने में सहायक हो सकते हैं, ताकि अपशिष्ट प्रबंधन में नागरिक भागीदारी और अधिक मजबूत हो। विद्यार्थीगण

दूसरों के भी अंदर सतत विकास को जागरूक का कार्य किया जाता हैं। यहाँ यह भी देखा गया कि उपभोक्ता व्यवहार में सततता और स्थानीय अर्थव्यवस्था के समर्थन की दिशा में सकारात्मक परिवर्तन को दर्शाता है।

शैक्षिक निहितार्थ

शोध से यह स्पष्ट हुआ कि विद्यार्थियों में सतत विकास को लेकर सकारात्मक सोच है, परंतु वैश्विक पहलों जैसे SDGs एवं पेरिस समझौते की जानकारी अपेक्षाकृत सीमित है। अतः आवश्यक है कि विश्वविद्यालय स्तर के पाठ्यक्रमों में सतत विकास के सिद्धांतों, लक्ष्यों और वैश्विक प्रयासों को स्पष्ट रूप से शामिल किया जाए ताकि छात्रों में समग्र दृष्टिकोण का विकास हो। सतत विकास केवल पर्यावरण तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सामाजिक न्याय, आर्थिक समावेशन और नैतिक उत्तरदायित्व से भी जुड़ा हुआ है। इस शोध के आधार पर शैक्षिक संस्थानों को बहु-विषयक (interdisciplinary) दृष्टिकोण को अपनाने की प्रेरणा मिलती है, जिससे विद्यार्थी सततता को विभिन्न क्षेत्रों में समझ और लागू कर सकें। विद्यार्थियों ने अपने दैनिक जीवन में सतत जीवनशैली अपनाने की कोशिश की है। यह संकेत करता है कि शैक्षिक संस्थानों को व्यावहारिक शिक्षा जैसे परियोजना कार्य, फील्ड वर्क, वृक्षारोपण, कचरा प्रबंधन आदि को शिक्षा का अभिन्न हिस्सा बनाना चाहिए, जिससे ज्ञान के साथ-साथ व्यवहार परिवर्तन भी सुनिश्चित हो। विद्यार्थियों द्वारा सततता को बढ़ावा देने के व्यक्तिगत प्रयास (जैसे दूसरों को जागरूक करना) इस बात का संकेत है कि विश्वविद्यालय और समाज के बीच सेतु की भूमिका निभाई जा सकती है। उच्च शिक्षा संस्थानों को अपने आस-पास के समुदायों में भी सतत विकास के संदेश फैलाने हेतु कार्यक्रम चलाने चाहिए।

संदर्भ सूची

1. ब्रंटलैंड, जी.एच.(1987).हमारा साझा भविष्य: पर्यावरण और विकास पर विश्व आयोग की रिपोर्ट.ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.
2. संयुक्त राष्ट्र महासभा (1987).पर्यावरण और विकास पर विश्व आयोग की रिपोर्ट: हमारा साझा भविष्य मार्च 2022 संग्रहीत 2022-03-31वेबैक मशीन.
3. जकर, रॉल्फ; मथार, रीनर, संपादक (27 अक्टूबर 2014).यूरोप में सतत विकास के लिए स्कूली शिक्षा: सतत विकास के लिए शिक्षा के संयुक्त राष्ट्र दशक के अंत में अवधारणाएँ, नीतियाँ और शैक्षिक अनुभव. चाम, स्विटज़रलैंड.आईएसबीएन 978-3-319-09549-3ओसीएलसी 894509040.
4. यूनेस्को(2014).स्थिरता और उच्च शिक्षा:एक वैश्विक परिप्रेक्ष्य.संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन.
5. कपूर,ए एवं शर्मा, पी.(2019).भारतीय उच्च शिक्षा में सतत विकास: विद्यार्थियों का दृष्टिकोण. इंडियन जर्नल ऑफ हायर एजुकेशन, 31(3), 45-57.
6. प्रधान, आर एवं भगत, एस.(2020).मानसिकता बदलना: स्थिरता के प्रति छात्र व्यवहार को समझना.पर्यावरण शिक्षा अनुसंधान, 26(5), 657-671.
7. रॉबिन्सन, जे. (2019).शिक्षण स्थिरता: एक वैश्विक परिप्रेक्ष्य.ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.
8. स्टिब्बे, ए. (2015).स्थिरता में शिक्षा की भूमिका: पर्यावरणीय मुद्दों से आगे बढ़ना.अर्थस्कैन. एलोनोरा कॉन्सिना एवं सारा फ्रेट.(2023)रुझान उच्च. शिक्षा,2(4), 705-717; https://doi.org/10.3390/higheredu2040041 - 12 दिसंबर 2023.
9. ओल्सन, डी.एवं गेरिके, एन.(2017),"छात्रों की स्थिरता चेतना पर लिंग का प्रभाव: एक राष्ट्रव्यापी स्वीडिश अध्ययन",द जर्नल ऑफ़ एनवायर्नमेंटल एजुकेशन, वॉल्यूम। 48 नंबर 5, पीपी. 357-370, डीओआई: 10.1080/00958964.2017.1310083.

10. स्टर्लिंग, एस.(2001).सतत शिक्षाः सीखने और परिवर्तन पर पुनर्विचार करना. ग्रीन पुस्तकें.
11. स्कॉट, डब्ल्यू.(2009).उच्च शिक्षा और सतत विकासः विरोधाभास और संभावना.रूटलेज.
12. क्लेटन, एस.एवं मायर्स, जी.(2015). संरक्षण मनोविज्ञानः प्रकृति के प्रति मानव देखभाल को समझना और बढ़ावा देना. वाइली-ब्लैकवेल.
13. गोल्डमैन, डी.,यावेट्ज, बी., एवं पीअर, एस. (2013). इज़राइल में शिक्षक प्रशिक्षण में पर्यावरणीय साक्षरताः नए छात्रों का पर्यावरणीय व्यवहार.पर्यावरण शिक्षा पत्रिका, 44(3), 222-231। https://doi.org/10.xxxx/jeed.2013.0000
14. बार्टलेट, पी.एफ.एवं चेस,जी.डब्ल्यू.(2008).विश्वविद्यालय परिसर में स्थिरताः परिवर्तन के लिए कहानियाँ और रणनीतियाँ. एमआईटी प्रेस.
15. लियू, क्यू., तियान, ज़., बैंग, वाय., एवं पार्क, के. एच. (2023)। सतत विकास व्यवहार की ओर ज्ञान और अभिवृत्तिः कॉलेज छात्रों की अनौपचारिक ऑनलाइन शिक्षा का एक मध्यस्थ प्रभाव। जर्नल ऑफ बाल्टिक साइंस एजुकेशन, 22(5), 900–913। https://doi.org/10.33225/jbse/23.22.900